Vijay Kumar Jha
Assott Prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar

Degree Part I

Origene of Mauryan Empire.

मौर्य काल भारतीय इतिहास में प्रकाशमय युग के नाम से जाना जाता है। मौर्यकालीन इतिहास जानने के लिये, साहित्यिक, पुरातात्विक, विदेशी यात्रियों के विवरण आदि स्रोत है।

नन्दवंश के अत्याचार से त्रासित होकर भारत में मौर्य वंश कि स्थापना नंदवंश के नींव पर हुआ। मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया था। मौर्य कौन थे यह विवादास्पद विषय है और इतिहासकारों ने विभिन्न मत दिये हैं। स्पूनर के अनुसार मौर्य पारसीक थे क्योंकि मौर्य कि परम्परा पारसी थी। ब्राह्मण साहित्य, विष्णुपुराण मुद्राराक्षस, कथासरित्सागर के अनुसार मौर्य शूद्र थे। रोमिला थापर के पुस्तक Ashoka and the decline of the Mauryas में मौर्य को वैश्य माना गया है। बौद्ध साहित्य, महावंश के अनुसार चन्द्रगुप्त मोरिय क्षत्रिय थे। जैन साहित्य परिशिष्ट पर्व के अनुसार मौर्य मयूर पोषकों के मुखिया के पुत्री का पुत्र था।

उपर्युक्त विभिन्न मतों के परीक्षणोपरान्त बौद्ध एवं जैन साहित्य के प्रमाण उपयुक्त लगता है किन्तु उसे शूद्र अथवा निम्न जाति का सिद्ध करने का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। चन्द्रगुप्त के गुरु चाणक्य थे जो राजपद पर क्षत्रिय वंश के अधिकारी बन सकता है अतः एव चन्द्रगुप्त को क्षत्रिय मानना तर्कसंगत होगा। डा० आर० के मुखर्जी भी चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय मानते हैं।

मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य के विषय में पुराण के टीकाकार रत्नगर्भ ने चन्द्रगुप्त मौर्य को 'मुरा' नामक दासी का पुत्र कहा है अत मुरा से मौर्य कहलाने लगा। पुराणों के इस टीकाकार को इसके विषय में कोई ठोस आधार नहीं है। अतः मौर्य क्षत्रिय थे यही कथन सर्वमान्य है।

MARCH 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

Scanned with Can

महावंश में यह कहा गया है कि चन्द्रगुप्त मोरिय नगर के राजा का पुत्र था किन्तु इसका चन्द्रगुप्त माता के गर्भ में थी एक राजा ने मोरिय नगर के राजा का वध कर दिया। अचानक निकलने से अपने भाई की पालिका में चली, वहाँ अपनी माँ और एक पुत्र को जन्म दिया और चन्द्रगुप्त कहलाया। इस बालक का पालन एक ग्वाले ने किया बालक चन्द्रगुप्त मिलनसार था संयोगवश चाणक्य कि नजर इस बालक पर पड़ी उनकी तेजस्वी खोज को देखकर ग्वाले से खरीद लिया चाणक्य उसे तक्षशिला ले गया और युद्ध में निपुण बना दिया। चाणक्य एक नन्द राजा के आदेशों से अपमानित हुआ था अतः उसे चन्द्रगुप्त जैसा व्यक्ति चाहिए था जो (मित्र)

चाणक्य कि कूटनीति और चन्द्रगुप्त कि शक्ति ने मौर्य साम्राज्य कि स्थापना किया और पश्चिमोत्तर भारत को यूनानी शासन से मुक्त किया। बौद्ध ग्रंथ महावंश से ज्ञात होता है, चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने सर्वप्रथम मगध पर अधिकार करने का प्रयास किया। नन्द राजा धननन्द ने चाणक्य का अपमान किया था अतः जन कल्याण होने का लक्ष्य हो गया। फिर चन्द्रगुप्त को एक बुढ़िया कि कथन - रोटी को किनारे से खाना चाहिए न कि बीच से, चन्द्रगुप्त को अत्यन्त प्रभावित किया अतः चन्द्रगुप्त ने सीमावर्ती क्षेत्रों पर विजय योजना बनाया।

चन्द्रगुप्त सर्वप्रथम पंजाब पर आक्रमण किया और उसे पराजित किया। तत्पश्चात् कश्मीर के राजा पर्वतक से मित्रता स्थापित किया और उससे सैनिक सहायता प्राप्त किया, पर्वतक का उद्देश्य कि सैनिक मदद के बिना विजय मुश्किल काम था। अतः चन्द्रगुप्त ने आलिप्तिक शक्ति के साथ यूनानियों पर आक्रमण किया क्योंकि चन्द्रगुप्त को मगध हासिल करना था। चन्द्रगुप्त मगध पर आक्रमण कर दिया और मगध पर अधिकार कर नन्द वंश के अंतिम शासक धननन्द को खदेड़ दिया।

322 ई०पू० चन्द्रगुप्त का विधिवत् राज्यारोहण हुआ तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त ने शासन पर अधिकार किया चन्द्रगुप्त ने उत्तर भारत पर भी विजय प्राप्त किया था उनका अगला निशाना दक्षिण भारत बना और ने दक्षिण भारत को जीतकर

पर विजय प्राप्त कर लिया। अशोक के शिलालेख से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त ने मैसूर के दक्षिण भाग तक मौर्य साम्राज्य में मिला लिया था दक्षिण भारत पर मौर्य साम्राज्य का आधिपत्य था। जूनागढ़ अभिलेख से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त ने पश्चिमी सागर से पूर्वी सागर तक साम्राज्य विस्तार स्थापित किया चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में कश्मीर, नेपाल, बंगाल और मालवा भी था। जैन ग्रंथों से पता चलता है कि अवंति पर भी मौर्य साम्राज्य का अधिकार था।

चन्द्रगुप्त को यूनानी आक्रमणकारी सेल्यूकस से भी उलझना पड़ा क्योंकि वह भारत में यूनानी साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। यूनानी लेखकों के लेख से युद्ध का तो विवरण नहीं मिलता है किंतु चन्द्रगुप्त और सेल्यूकस के बीच संधि हुई जिसमें चन्द्रगुप्त को चार प्रांत एरिया, अराकोसिया, गेड्रोसिया तथा पेरोपनिसेडाई मिला जिससे चन्द्रगुप्त कि साम्राज्य सीमा अफगानिस्तान तथा बलुचिस्तान तक फैल गया भारत कि सीमा अब हिन्दुकुश पहाड़ी तक विस्तृत हो गया।

२५ वर्षों कि निरंतर प्रयासों में चन्द्रगुप्त ने चाणक्य की मदद से एक विशाल मौर्य साम्राज्य कायम कर लिया, जो कश्मीर से मैसूर तक तथा कामरूप से पश्चिम में हेरात, काबुल, कंधार तक बलुचिस्तान तक फैल गया। इतना विस्तृत साम्राज्य चन्द्रगुप्त से पूर्व कभी नहीं कायम हुआ था। V. A. स्मिथ के अनुसार – उसने भारत के लिये वैज्ञानिक सीमा प्राप्त की जो ब्रिटिश शासक भी प्राप्त नहीं कर सके।

चन्द्रगुप्त एक योग्य सेनापति तथा कुशल राजनीतिज्ञ था। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर वह अपनी सूझ-बूझ से एक विस्तृत साम्राज्य कायम किया। सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्राचीन भारत में राजनीतिक एकता कायम किया। वह प्रथम सार्वभौम सम्राट था जिसकी ~~[illegible]~~ गणना भारत में महानतम सम्राटों में किया जाता है।

इण्डिका ग्रंथ के लेखक मेगास्थनीज जो चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनान का राजदूत था, ने चन्द्रगुप्त के भारत का भूरि-भूरि प्रशंसा किया है।